RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

भारतीय समाज में महिलाएँ

कुमारी रेखा

शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 May 2019

Keywords
बलात्कार, अपहरण, छींटाकशी, छेड़छाड़

ABSTRACT

भारतीय समाज में आज भी नारी का दर्जा पुरुष से कम है। नारी की मातृत्व–क्षमता का आदर करने के बजाय इसी को उसकी कमजोरी मान लिया गया है। जिस देश में नर–नारी दोनों को एक ही परमब्रह्म के दो रूप माना गया था उसी देश में नारी की स्थिति नर से निम्न हो गयी। इस भेद–प्रवृत्ति को कायम रखने के लिए धर्म की मदद ली गई। पिण्डदान, वंश–वृद्धि, आर्थिक एकाधिकार के नाम पर जन्म से ही भेद– दृष्टि रखी जाने लगी। नारी को भोग्या, ठगिनी, कुलटा, अबला, अस्पृश्या, कामिनी आदि उपाधियों से नवाजा जाने लगा। माना पुरुष तो भोगी, ठग, कुटिल, कायर, कामी हो ही नहीं सकते या उनमें इन दुष्प्रवृत्तियों की उत्तरदायी सिर्फ नारी ही होती है। आज भी समाचार–पत्रों में पुत्र–प्राप्ति हेतु बलि देने, जन्म से पहले ही पुत्री को मार डालने, दहेज प्रथा के कारण वधुओं को जला डालने, अमानवीय यंत्रणा देने जैसी घटनाएँ पढ़ने को मिलती है। बलात्कार, अपहरण, छींटाकशी, छेड़छाड़ जैसी घटनाओं का तो अन्त ही नहीं है।

भारतीय संस्कृति में नारी का व्यक्तित्व गरिमामयी रहा है। नर–नारी एक–दूसरे के पूरक माने गए हैं। वैदिक काल में नारी का महत्त्व रहा है। उसे गृह लक्ष्मी का दर्जा दिया जाता है। उसका–कार्य घर की देखभाल करना निश्चित किया गया है। मध्यकाल आते–आते आर्थिक भार पुरुषों के कंधों पर रहा। पुरुष–प्रधान भारतीय समाज में नारी को सदैव आश्रिता समझा गया। घर–गृहस्थी की चौखट के भीतर नारी से आशा की जाती है वह चाहे जैसी भी स्थिति हो उसे सिर झुकाकर स्वीकार कर ले। आँचल में दूध और आँख में पानी लिये जीवन जीती रहे। किसी से गिला–शिकवा करने का अधिकार भी उसके पास नहीं था। समस्त प्रकार के नैतिक दायित्व नारी के लिये ही थे, पुरुष के लिए हर प्रकार की छूट थी। वह निकम्मा होकर भी नारी से कर्मठ होने की आशा कर सकता था। स्वयं कायर होकर भी नारी को मारकर अपनी बहादुरी दिर्शाता था। बेवफा होकर भी नारी से बफादार रहने की उम्मीद करता था। जहाँ कहीं नारी ने बेवफाई की वहाँ उसे दुनियाभर के धिक्कार को सहना पड़ा था। फिजुल खर्च होते हुए भी नारी को मितव्यता की शिक्षा देने वाला पुरुष नारी को यथार्थ से अलग कल्पना जगत की वस्तु मानकर व्यवहार करता था। उसका सौन्दर्य अपने भोग के लिये प्रदत्त मानता था। शादी भी वह संतान और स्वयं के सुख के लिए करता था। प्रेम और सैक्स में सैक्स ही प्रधान था, बल्कि सैक्स ही प्रेम था। सन्तान न होना या सिर्फ लड़कियाँ होने की जिम्मेदारी नारी पर थोपने में उसे जरा भी लज्जा नहीं आती थी। नारी की सब इच्छाएँ, आकांक्षाएँ परिवार की तीमारदारी में ही खो जाती थीं। भाई, पिता, पति–पुत्र की प्रधानता को सहना जैसे नारी की नियति बन गई हो। मायका उसके लिए पराया घर था और ससुराल में उसका अपना कोई घर नहीं था। उसके लिए कोई अपनत्व नहीं था। परम्परा को निभाते–चलाते ही हंस–रो कर उसके जीवन की साँझ हो जाती थी। नई कहानियों में इन स्थितियों का खुला चित्रण मिलता है।[1]

आज भी शिक्षा–क्षेत्र में लड़कियों का प्रवेश लड़कियों की अपेक्षा न्यून है। परीक्षा–परिणामों में लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा बाजी मारती हुई साबित होती है, किन्तु फिर भी पिछड़े इलाकों या वर्गों में बालिकाओं की शिक्षा–दीक्षा पर ध्यान कम ही दिया जा रहा है। फलतः अशिक्षाजनित दोष नारी–समाज में विद्यमान है। अन्धविश्वास, जादू–टोना–टोटका, ज्योतिषियों, बाबाओं, ओझाओं आदि द्वारा वह ठगी जा रही है। पुरुष अधीनता को वह अपनी नियति मान रही है, बल्कि इसी को वह अपना परम धार्मिक कर्त्तव्य भी समझती है। न केवल अनपढ़ ग्रामीण, पिछड़ी महिलाएँ बल्कि पढ़ी–लिखी घर–बाहर की जिम्मेदारी सम्भालती महिलाएँ भी अनेक तरह से पुरुष–मानसिकता एवं आधिपत्य को झेलने के लिए बाध्य है। नारी– स्वतंत्रता, नारी–जागृति की आशान्वित कल्पना अभी पूर्णतः साकार नहीं हुई है। आज नारी–स्वतंत्रता का अर्थ उच्छृंखलता में परिवर्तित किया जा रहा है। नर–नारी सम्बन्धों में उन्मुक्त यौन–सम्बन्ध, फैशन के नाम पर नारी–देह–प्रदर्शन जैसी विकृतियाँ समाज में फैलने लगी हैं। पूँजीवादी मानसिकता वाले लोग अब नए तरीके से नारी–भोग का मार्ग ढूँढ रहे हैं। सिनेमा, विज्ञापन, पाश्चात्य संस्कृति आदि के द्वारा नारी को निर्लज्ज बनाकर व्यभिचार के पंक में धकेलने की साजिश रची जा रही है। 'सुन्दरता' और 'शरीर' को मानवीय भावनाओं से अधिक महत्त्व देकर पाशचात्य देश शृंगार–उद्योग को पनपने का अवसर दे रहे हैं। तरह–तरह के ब्यूटी–कम्पीटिशनस की बढ़ोत्तरी उसका प्रमाण है। शिक्षण–संस्थान तक इस दैहिक प्रदर्शन से अछूते नहीं रह पाए हैं। पिछड़े गाँवदेहात तक की नारियाँ तरह–तरह की सौन्दर्य–सामग्रियों से परिचित होने लगी हैं। छेड़–छाड़, बलात्कार, हत्या, आत्महत्या आदि घटनाओं के पीछे नारी के देह–प्रदर्शन का भी योगदान है। अश्लील साहित्य और सिनेमा, नैतिक

RRIJM 2015, All Rights Reserved

शिक्षा का अभाव, उचित देखभाल का अभाव आदि के कारण आज भी नारी दिग्भ्रमित और शोषित है। सच्चे अर्थों में 'नारी–स्वतंत्रता अभियान' आज की प्राथमिकता है। नारी को अपनी प्रतिभा का उपयोग करके 'सबला' बनना होगा। अपने अस्तित्व और स्वाभिमान के प्रति सचेत रहकर आम्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ाना होगा। इसके लिए न केवल मानसिक बल्कि शारीरिक रूप से भी सुदृढ़ता पाने के प्रयास करने होंगे। उसे यह अच्छी तरह समझ लेना होगा कि वह नर से किसी भी प्रकार कम नहीं है। जितनी आवश्यकता नारी को नर की है, उतनी नर को नारी की। दोनों परस्पर पूरक हैं। दोनों के कर्त्तव्य समान हैं तो अधिकार भी समान होने चाहिए। अर्द्धनारीश्वर[2] संस्कृति को दृढ़ता से अपनाना आवश्यक है। स्वास्थ्य, शिक्षा, राजनीति, न्याय, व्यवसाय आदि के क्षेत्र में नारी हितार्थ व्यवस्थाएँ की गई हैं उसका लाभ उठाना चाहिए। समाज में मौजूद दहेज प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, पर्दा–प्रथा जैसी कुरीतियों का डटकर मुकाबला करना, कन्या–भूण–हत्या को रोकना, यौन–शोषण का विरोध करना, नारी अत्याचार को मिटाना आदि आज की चुनौतियाँ हैं।

स्वतंर्त्योत्तर–काल नारी के लिए नवीन चेतना का काल बन कर आया। शिक्षा, नारी जागृति आन्दोलन, राजनैतिक–संरक्षण, संविधान प्रदत्त अधिकार आदि के कारण नारियों ने अपने अस्तित्व को पहचानना शुरु किया। परिवार से शुरु कर नारी ने अपना विरोधी स्वर समस्त देश में गुँजायमान कर दिया। उसकी आवाज पर उसे समर्थन भी मिला।[3] नई कहानी में नारी के व्यक्तिगत चेतन स्वरूप के साथ–साथ उसके पारिवारिक और सामाजिक स्वरूप का चित्रण भी किया गया है। समाज में नारी के सामाजिक पहलुओं को विविधता के साथ दर्शाया गया है। कहीं नारी के अकेली, कहीं दुकेली और कहीं बहुली दिखाया गया है। कहीं नारी शिक्षिता है तो कहीं अशिक्षिता, कहीं नौकरी पेशा है तो कहीं गृहिणी। कहीं देशीपन लिए हुए है तो कहीं विदेशीपन। नई कहानी में नारी का परिवार और परिवारेत्तर सम्बन्ध भी बहुतायत से दिखाई देता है। नारी को पत्नी रूप में, प्रेमिका रूप में और पत्नी तथा प्रेमिका दोनों रूपों में चित्रित किया गया है। सुहागिन, विधवा, तलाकशुदा, मित्रयुक्त– नारी इन विविध रूपों की छवि हम नई कहानी में देख सकते हैं। नई कहानी के समय समाज में आधुनिक विचार प्रभावी थे। पाश्चात्य चेतना भारतीय समाज की चेतना बनती जा रही थी। स्त्री–पुरुष संबंधों को एक नवीन दृष्टि कोण से प्रस्तुत किया जाने लगा। समाज में पुरुष प्रधानता को स्त्रियों द्वारा चुनौती दी जाने लगी। पुरुष और स्त्री भेद मिटने लगा। स्त्री और पुरुष साथ–साथ काम करने लगे। अब औरतों को अपने संरक्षण के लिए पुरुषों पर निर्भर नहीं रहने की स्थिति बनने लगी। अब घर से बाहर उसे किसी पुरुष की आवश्यकता नहीं पड़ती। पति को वह अपने समकक्ष मानने लगी है। घर के मुखिया के रूप में पुरुष की मर्जी चलती आई थी। आधुनिक नारी ने अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की चाह के चलते अपने निर्णय स्वयं लेना शुरु कर दिया। पुरुष की बाँदी बने रहने के बजाय मतभेद की स्थिति में वह उसे तलाक भी देने लगी। पिता द्वारा लड़की का वर तलाशना परम कर्त्तव्य माना जाता था। लड़की भी पिता द्वारा चुने गये वर को चुपचाप अपनाना पड़ता था। नई कहानी में अनेक स्थानों पर लड़कियों ने अपने द्वारा चुने लड़के से विवाह किया है। अब लड़कियाँ पिता के निर्णय में भी हस्तक्षेप करने लगी हैं। प्रेम विवाह करें या आजीवन कुँवारी रहे, यह निर्णय वह स्वयं करने लगी। परिवार में भाई की अपेक्षा बहनों का महत्व नगण्य था। परिवर्तित– परिस्थितियों में बहनें आर्थिक रूप से सक्षम हुई और भाईयों की अपेक्षा परिवार में अधिक महत्व प्राप्त करने लगीं। भाई की तरह वह भी पिता की गृहस्थी–बोझ उठाने का उपाय करने लगी। आर्थिक जिम्मेदारी निभाना उसे भी अपना कर्त्तव्य जान पड़ने लगा। नई कहानी में बहन–बेटी के इस नवीन रूप को भी रूपायित किया गया। पत्नी एवं प्रेमिका के रूप में नारी के विविध रूप स्वतंत्र चेतनायुक्त हैं। गृहणी हो या नौकरीपेशा, नारी ने कदम–कदम पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर्रवाई है। नई कहानी में नारी अभूतपूर्व रूप में प्रस्तुत हुई है।

निष्कर्ष–

हर्ष का विषय है कि नारी जागरण कि लहर सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो गई है। भारत में भी नारी–स्थिति में सुधार के ठोस प्रयास किये जा रहे हैं। भ्रूण–परीक्षण पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। समाज की जागरूकता से चोरी–छिपे हो रहे भ्रूण–परीक्षणों और कन्या–भूण–हत्या का पूर्णतः सफाया किया जा सकता है। महिला–पुरुष असन्तुलन से समाज परिचित हो गया है अतः पुत्री जन्म पर मातम मनाया जाना भी बन्द हो रहा है। पुत्री को पुत्र के समान आगे बढ़ने के अवसर मिलने लगे हैं। माता–पिता पुत्री की परवरिश पुत्र के समान करने लगे हैं। पुत्रैच्छा की प्रबलता कम होने लगी है। व्यवहार में पुत्रियाँ माता–पिता और घर–परिवार की ज्यादा हितैषी साबित हुई हैं। उनमें पुत्र की अपेक्षा अनैतिक कार्य–व्यापार, नशा, जुआ आदि दुर्गुण नहीं होते या अपवाद स्वरूप ही पाये जाते हैं। सेवा–भाव, दायित्व–भावना, मानवीयता, भावात्मकता, आध्यात्मिकता आदि सद्गुणों के कारण नारी को सम्मान मिलने लगा है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही है। नारी की बौद्धिकता, परिश्रम और जागरण आने वाले समय में अपनी श्रेष्ठता को साबित कर रहा है। न केवल नारी बल्कि सम्पूर्ण देश नारी–उत्थान के लिए प्रयासरत है। अतः सम्भावनाभरा भविष्य साकार होना ही चाहिए। पुरुष भी तो अब अपना लिंग परिवर्तित कराकर नारी बन जाने में संकोच नहीं करता। नारी सम्मान का इससे बढ़कर उदाहरण और क्या होगा ? पुरुषों के वर्चस्व को अजमा चुका युग परिवेश अब नारी–शक्ति और नेतृत्व का आकांक्षी है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ सूची :

1. पाणिनी प्रो० एम०एन०– ए स्टडी ऑफ इंडस्ट्रीयलाईजेन इन इंडिया, सेन्टर फॉर स्टडी ऑन सोशल सिस्टमस, जे० एन०यू० एन०सी०एस०ई०डब्लू।
2. दूवे–एच०एन०–भारतीय संस्कृति–1990–शारदा प्रकाशन– इलाहाबाद, पृ०– 119।
3. बिहार समाचार– 11 अगस्त– 1971।
4. श्रुति सर्वे ऑफ आटीसन्स रॉ मैटीरीयल एवं आर्टिसन्नस अप्रकाशित।

RRIJM 2015, All Rights Reserved